दादा भगवान परिवार का

मई - २०१९

शुल्कप्रति नकल : ₹ 20/-

अक्रम एक्सप्रेस

भगवान श्री राम और श्री हनुमान जी

संपादकीय

बालमित्रों,

भगवान श्री राम का परिचय देने की ज़रूरत है क्या? एक श्रेष्ठ पुत्र, भाई, पति, पिता और शिष्य के रूप में, वे समस्त विश्व के समक्ष एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं और अंत में वे अपने सभी कर्मों को खत्म करके अभी मोक्ष में विराजमान हैं। इसीलिए तो जगत् उन्हें भगवान के रूप में पूजता है।

भगवान श्री राम के परम भक्त हनुमान जी उनके प्रति अपनी उत्कृष्ट भक्ति के कारण पूजनीय हैं, वंदनीय हैं।

भगवान श्री राम तथा हनुमान जी का जन्मदिवस इसी महीने में आता है। तो चलो, इस प्रस्तुत अंक ने उनके जीवन संबंधीं प्रसंगों को जानकर उनकी भक्ति में लीन रहें।

बोलो श्री रामचंद्र की जय...

पवनपुत्र हनुमान की जय...

-डिम्पल मेहता

भगवान श्री राम और श्री हनुमान जी

वर्ष : ७ अंक: २

अखंड क्रमांक: ७५

मई - २०१९

संपर्कसूत्र

बालविज्ञान विभाग

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद - कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात

फोन : (०७९) ३९८३०१००

email:akramexpress@dadabhagwan.org

Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2018, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)

भारत :२०० रुपए

यू.एस.ए. :१५ डॉलर

यू.के. :१२ पाउन्ड

पाँच वर्ष

भारत : ८०० रुपए

यू.एस.ए. : ६० डॉलर

यू.के. : ५० पाउन्ड

D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजो।

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम और श्री कृष्ण को पूर्ण पुरुषोत्तम कहा है, यह सही है?

दादाश्री : वास्तव में तो श्री राम ही पूर्ण पुरुषोत्तम कहे जाएँगे क्योंकि श्री राम मोक्ष में गए। श्री राम परमात्मा हो गए।

अनादिकाल से हर एक धर्म के मूल पुरुष जब हाज़िर होते हैं, जैसेकि श्री महावीर भगवान, श्री कृष्ण भगवान, श्री राम भगवान तब वे लोगों को सभी धर्मों के मत-मतांतर में से बाहर निकालकर आत्मधर्म में स्थिर करते हैं और समय पश्चात् मूल पुरुष की अनुपस्थिति होने की वजह से धीरे-धीरे दुनिया मतभेद में पड़ जाती है। धर्म में वाड़ा-संप्रदाय बन जाते हैं। उसके परिणाम स्वरूप लोग सुख-शांति गँवा देते हैं।

श्री कृष्ण भगवान ने पूरी ज़िंदगी में कभी नहीं कहा कि मैं वैष्णव हूँ या मेरा वैष्णव धर्म है। श्री महावीर भगवान ने पूरी ज़िंदगी में कभी नहीं कहा कि मैं जैन हूँ या मेरा जैन धर्म है। भगवान श्री रामचंद्र जी ने कभी नहीं कहा कि मेरा सनातन धर्म है। सभी ने आत्मा को पहचानकर मोक्ष में जाने की ही बात कही है। जैसेकि गीता में श्री कृष्ण भगवान ने, आगम में तीर्थंकरों ने और योग वसिष्ठ में वसिष्ठ मुनि ने श्री रामचंद्र जी से आत्मा को पहचानने की ही बात की है। जीव अर्थात् अज्ञान दशा। शिव अर्थात् कल्याण स्वरूप। आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद वही जीव शिव हो जाता है। शिव अर्थात् किसी व्यक्ति की बात नहीं है।

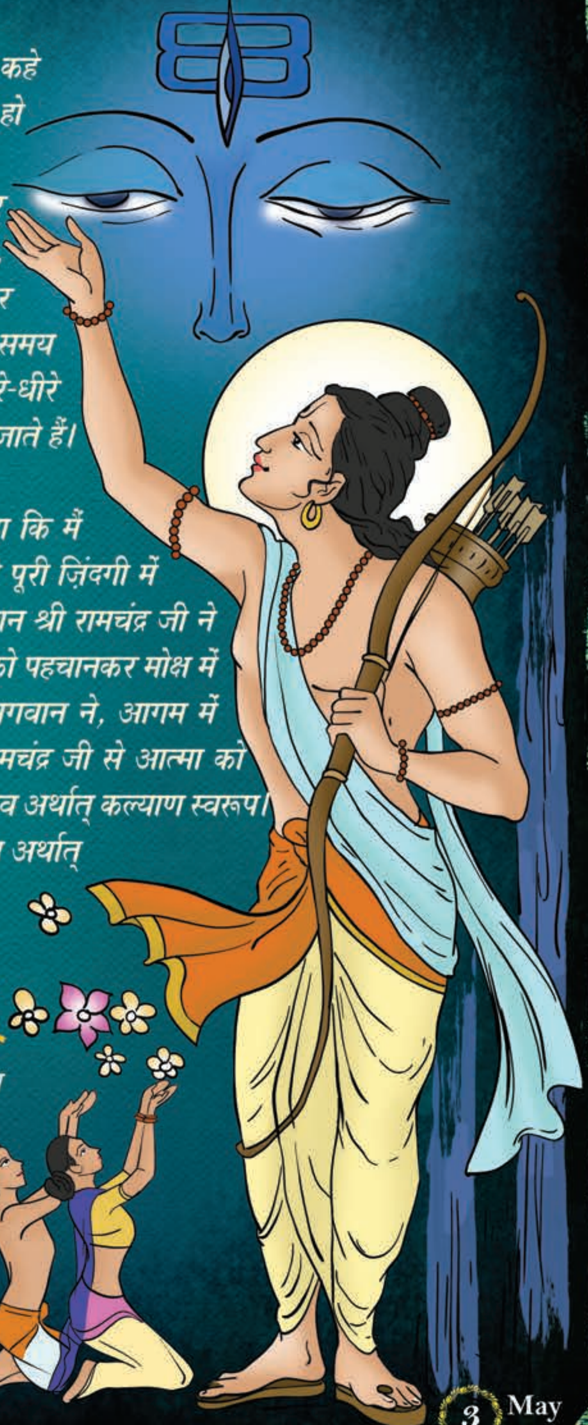

त्रिरसठ शलाका पुरुष

शलाका पुरुष अर्थात् मोक्ष में जाने लायक श्रेष्ठ पुरुष। मोक्ष में तो और भी जाएँगे लेकिन ये श्रेष्ठ पुरुष कहे जाते हैं अर्थात् ख्याति के साथ होते हैं। संपूर्ण ख्याति प्राप्त करके मोक्ष में जाते हैं। हाँ, उनमें चौबीस तीर्थंकर होते हैं और बारह चक्रवर्ती होते हैं। फिर वासुदेव होते हैं, प्रति वासुदेव होते हैं और बलराम होते हैं।

श्री रामचंद्र जी बलराम कहलाते हैं, लक्ष्मण जी वासुदेव कहलाते हैं और रावण प्रति वासुदेव कहलाते हैं।

॥ यह तो नई ही बात है ॥

रावण वास्तव में महात्मा थे और आने वाली चौबीसी में तीर्थंकर देव होने वाले हैं। श्री राम भगवान ने हृदय से उनकी तरफ कभी भी रोष नहीं किया तो हम क्यों करें?

माता कैकई ने श्री राम को वनवास भेजने के पश्चात बहुत प्रायश्चित किया था। श्री राम ने उन्हें कभी भी दोषित नहीं देखा। तो हम क्यों उनके लिए उल्टा सोचें।

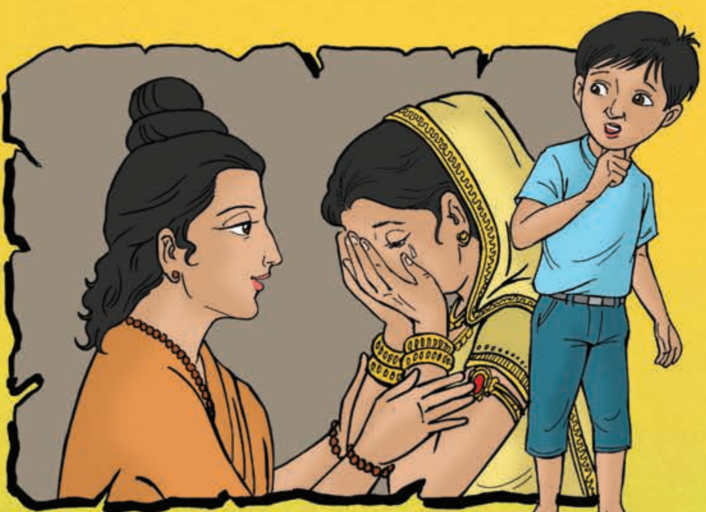

॥ श्री राम की पितृभक्ति ॥

"बेटा राम..." श्री राम के राज्याभिषेक की सुबह राजा दशरथ ने उन्हें आवाज़ लगाई।

"जी, पिताजी" कहकर वह राजा दशरथ के पास पहुँचे।

बेटा बात यह है कि कई सालों पहले मैंने कैकई से दो वरदान माँगने के लिए कहा था जो उसने समय आने पर माँगूँगी ऐसा कहकर बाकी रखे थे।"

श्री राम ध्यान से सुनते रहे।

"जो उसने आज माँगे हैं। भरत को अयोध्या की राजगद्दी और तुम्हें चौदह साल का वनवास।"

श्री राम के चेहरे पर अभी भी कोई बदलाव नहीं था।

"बेटा, राज्य के हक़दार तो तुम हो। लेकिन ऋणमुक्त होने के लिए मैं अयोध्या की राजगद्दी भरत को दे रहा हूँ। वत्स, तुम सहमत हो न?"

राजा दशरथ अपने पुत्र राम को सामने देख रहे थे। इतना कठिन निर्णय अपने प्रिय पुत्र को बताते हुए पिता का हृदय संताप से फटा जा रहा था। लेकिन उनके पास और कोई रास्ता नहीं था।

पिताजी की बात सुनकर राम उदास हो गए।

राजा दशरथ ने राम को उदास देखकर सोचा, "राम को कितना दुःख हुआ है, और क्यों नहीं हो... जिस राज्य पर उसका हक़ है वह मैंने उससे पूछे बिना भरत को सौंप दिया।"

उन्होंने राम के सिर पर हाथ रखकर कहा, "बेटा, मुझे पता है कि यह मैंने अच्छा नहीं किया है। तुम्हारी सहमति के बिना यह निर्णय ले लिया। मुझे माफ कर दो बेटा।"

राम ने तुरंत पिता को हाथ जोड़कर कहा, "पिताजी, आप यह क्या कह रहे हो? आप मुझसे माफी क्यों माँग रहे हो? मैं तो इसलिए दुःखी हूँ कि आज मुझे समझ में आया कि मैं सच्चा पितृभक्त नहीं बन पाया वर्ना मेरे लिए कोई भी निर्णय लेने के लिए आपको मेरी सहमति माँगनी पड़े ऐसा हो?

यह सुनकर राजा दशरथ की आँखों में अश्रु आ गए।

"पिताजी आप मुझे राज्य दीजिए या भरत को दीजिए, सब एक का एक ही है न? और भरत की क्या बात करते हो। यदि आपको ऐसा लगे कि राजमहल के पहरेदार को यह राज्य दे देना है फिर भी क्या हो गया? क्या यह राम आपके किसी भी निर्णय के आगे आएगा क्या? नहीं... ज़रा भी नहीं... आप जो भी करेंगे वह मेरे लिए भगवान ने किया, बराबर ही है।"

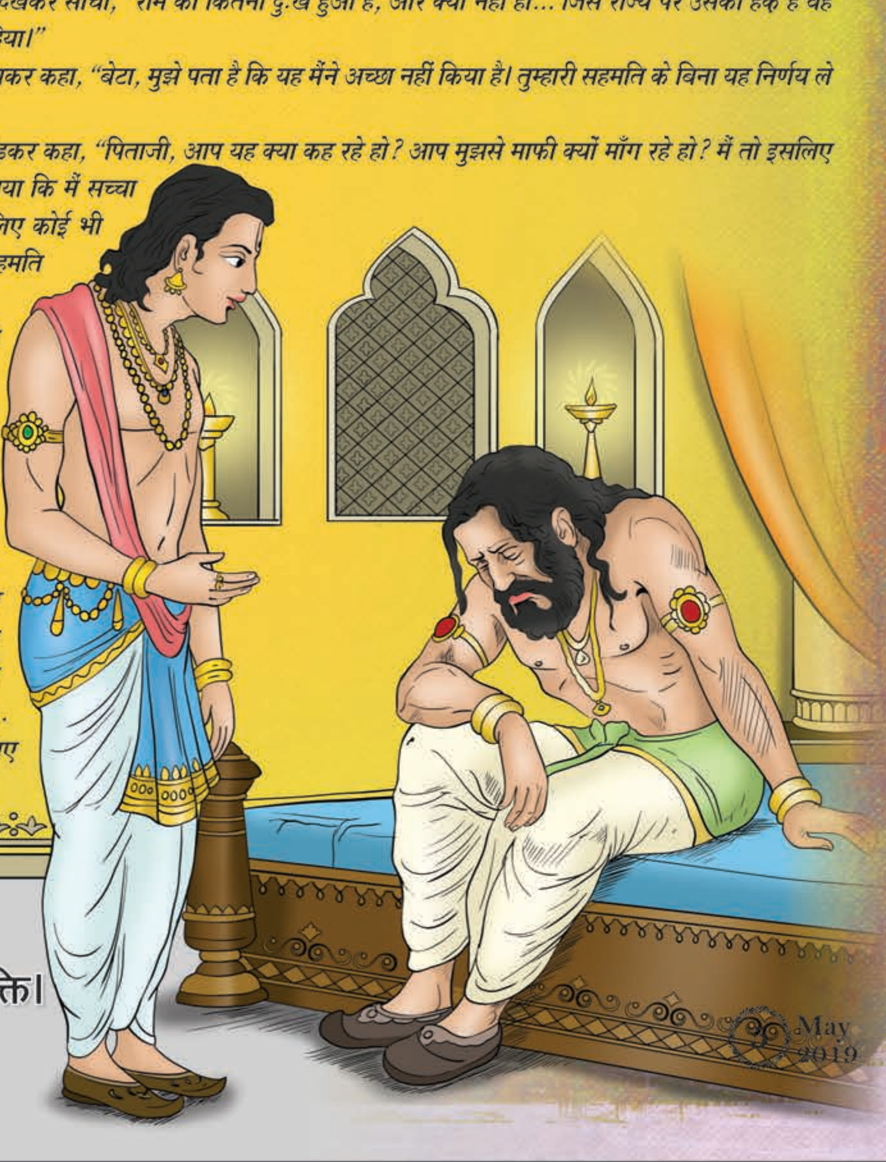

ऐसी थी श्री राम की पितृभक्ति।

॥ सीता-माता का सतीत्व ॥

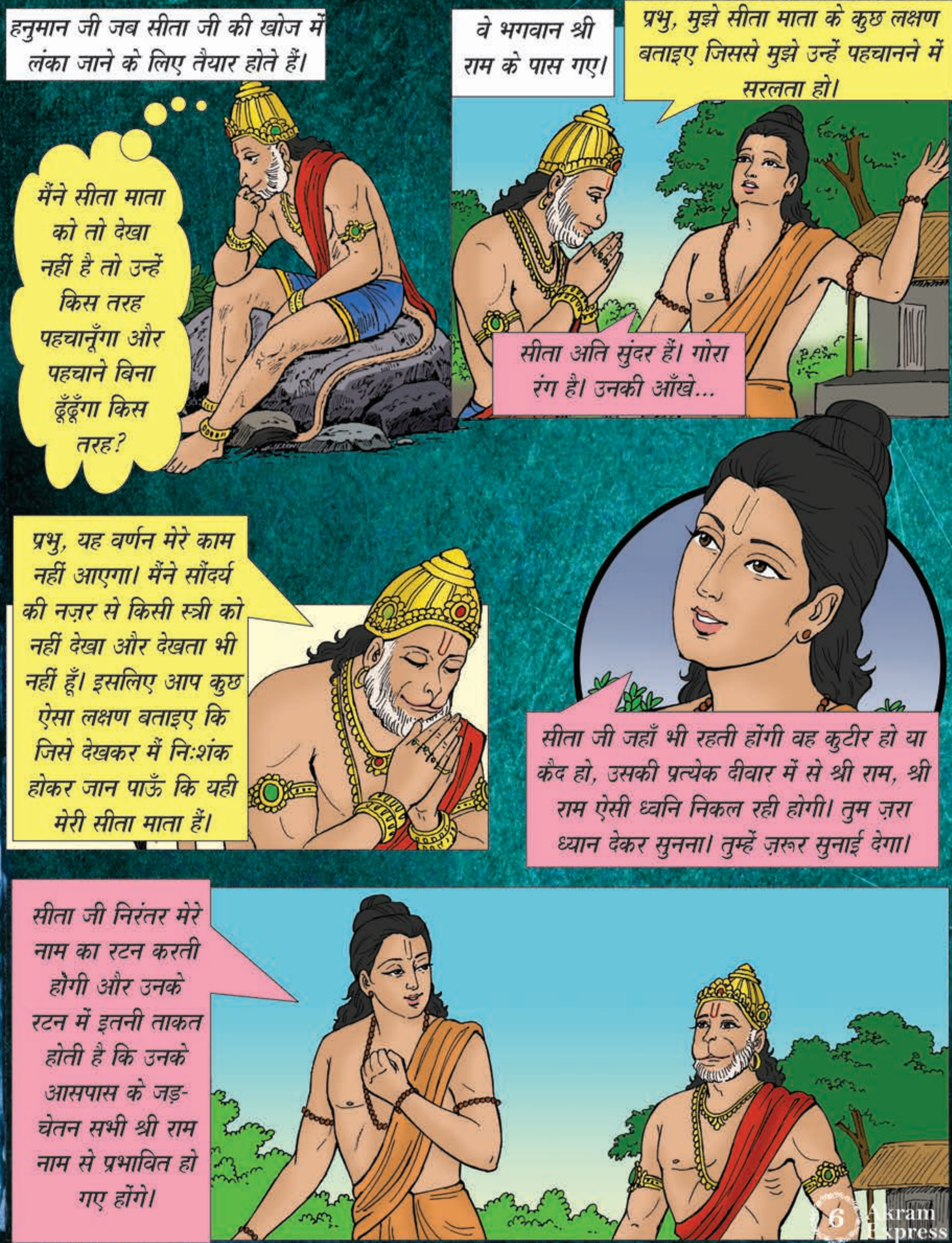

हनुमान जी जब सीता जी की खोज में लंका जाने के लिए तैयार होते हैं।
मैंने सीता माता को तो देखा नहीं है तो उन्हें किस तरह पहचानूँगा और पहचाने बिना ढूँढूँगा किस तरह?
वे भगवान श्री राम के पास गए।
प्रभु, मुझे सीता माता के कुछ लक्षण बताइए जिससे मुझे उन्हें पहचानने में सरलता हो।
सीता अति सुंदर हैं। गोरा रंग है। उनकी आँखे...
प्रभु, यह वर्णन मेरे काम नहीं आएगा। मैंने सौंदर्य की नज़र से किसी स्त्री को नहीं देखा और देखता भी नहीं हूँ। इसलिए आप कुछ ऐसा लक्षण बताइए कि जिसे देखकर मैं निःशंक होकर जान पाऊँ कि यही मेरी सीता माता हैं।
सीता जी जहाँ भी रहती होंगी वह कुटीर हो या कैद हो, उसकी प्रत्येक दीवार में से श्री राम, श्री राम ऐसी ध्वनि निकल रही होगी। तुम ज़रा ध्यान देकर सुनना। तुम्हें ज़रूर सुनाई देगा।
सीता जी निरंतर मेरे नाम का रटन करती होंगी और उनके रटन में इतनी ताकत होती है कि उनके आसपास के जड़-चेतन सभी श्री राम नाम से प्रभावित हो गए होंगे।

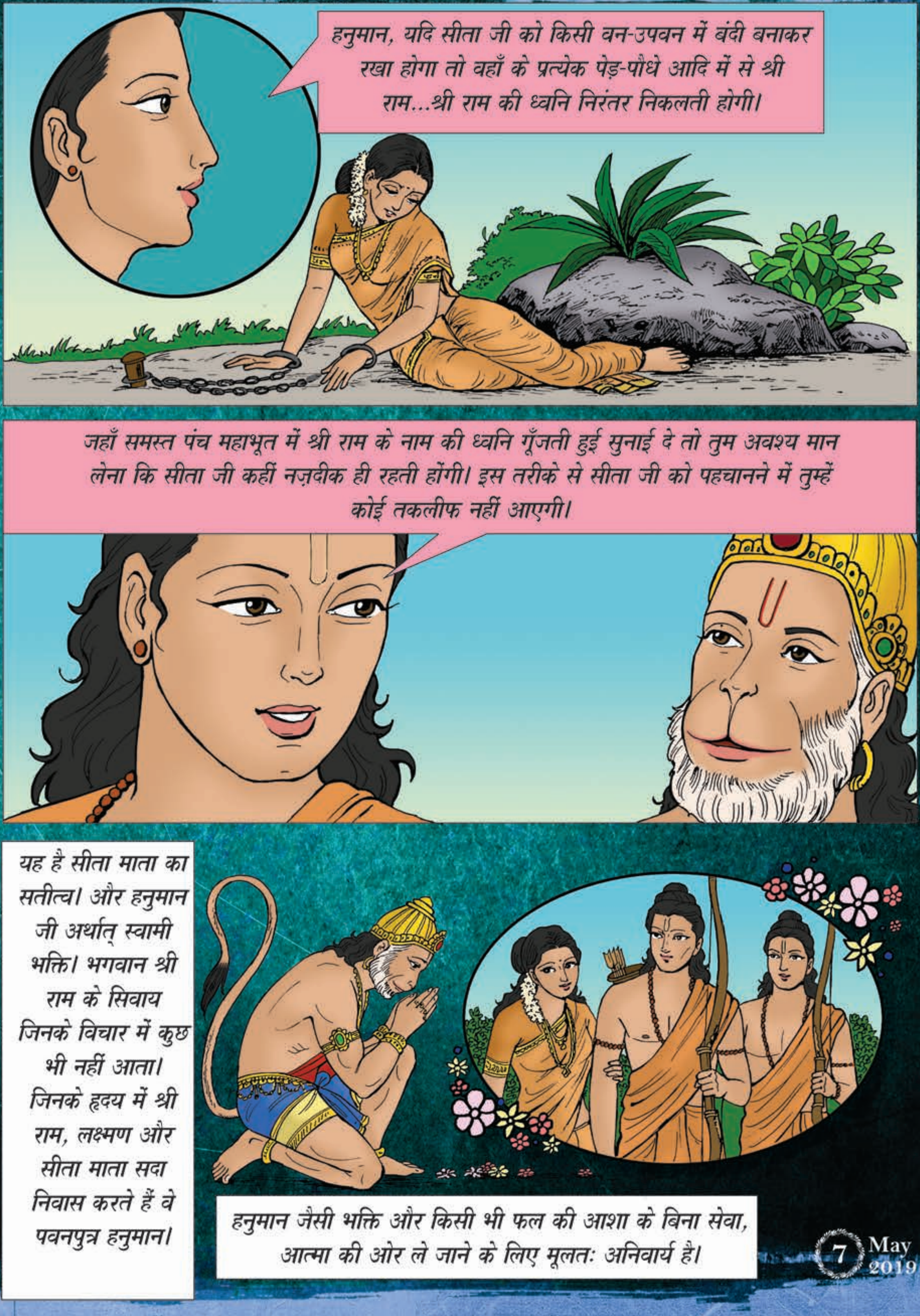
हनुमान, यदि सीता जी को किसी वन-उपवन में बंदी बनाकर रखा होगा तो वहाँ के प्रत्येक पेड़-पौधे आदि में से श्री राम...श्री राम की ध्वनि निरंतर निकलती होगी।
जहाँ समस्त पंच महाभूत में श्री राम के नाम की ध्वनि गूँजती हुई सुनाई दे तो तुम अवश्य मान लेना कि सीता जी कहीं नज़दीक ही रहती होंगी। इस तरीके से सीता जी को पहचानने में तुम्हें कोई तकलीफ नहीं आएगी।
यह है सीता माता का सतीत्व। और हनुमान जी अर्थात् स्वामी भक्ति। भगवान श्री राम के सिवाय जिनके विचार में कुछ भी नहीं आता। जिनके हृदय में श्री राम, लक्ष्मण और सीता माता सदा निवास करते हैं वे पवनपुत्र हनुमान।
हनुमान जैसी भक्ति और किसी भी फल की आशा के बिना सेवा, आत्मा की ओर ले जाने के लिए मूलतः अनिवार्य है।

॥ जिसे राम छोड़ देते हैं...॥

एक बार श्री राम और हनुमान वन में घूम रहे थे। वे घूमते-घूमते एक नदी पर पहुँचे। उस नदी के किनारे बहुत सारे पत्थर पड़े हुए थे। कुतूहल से श्री राम ने हनुमान जी पूछा, "हनुमान क्या पत्थर कभी पानी में तैर सकता है?"

श्री रामचंद्र जी के प्रश्न का उत्तर मुख से न देते हुए हनुमान जी ने एक पत्थर हाथ में लिया और ज़ोर से "हे राम!" बोलकर पानी में फेंक दिया और पत्थर तैरने लगा। श्री रामचंद्र जी को बहुत आश्चर्य हुआ।

उन्होंने भी तुरंत एक पत्थर उठाया और ज़ोर से पानी में फेंका।

लेकिन अफसोस! वह पत्थर डूब गया!

इससे श्री रामचंद्र जी चौंक गए। "अरे हनुमान! ऐसा कैसे? मैंने पत्थर फेंका तो वह डूब गया! यदि राम के नाम से पत्थर तैरता है, तो साक्षात् राम के हाथ से ही फेंका गया पत्थर क्यों नहीं तैरा?"

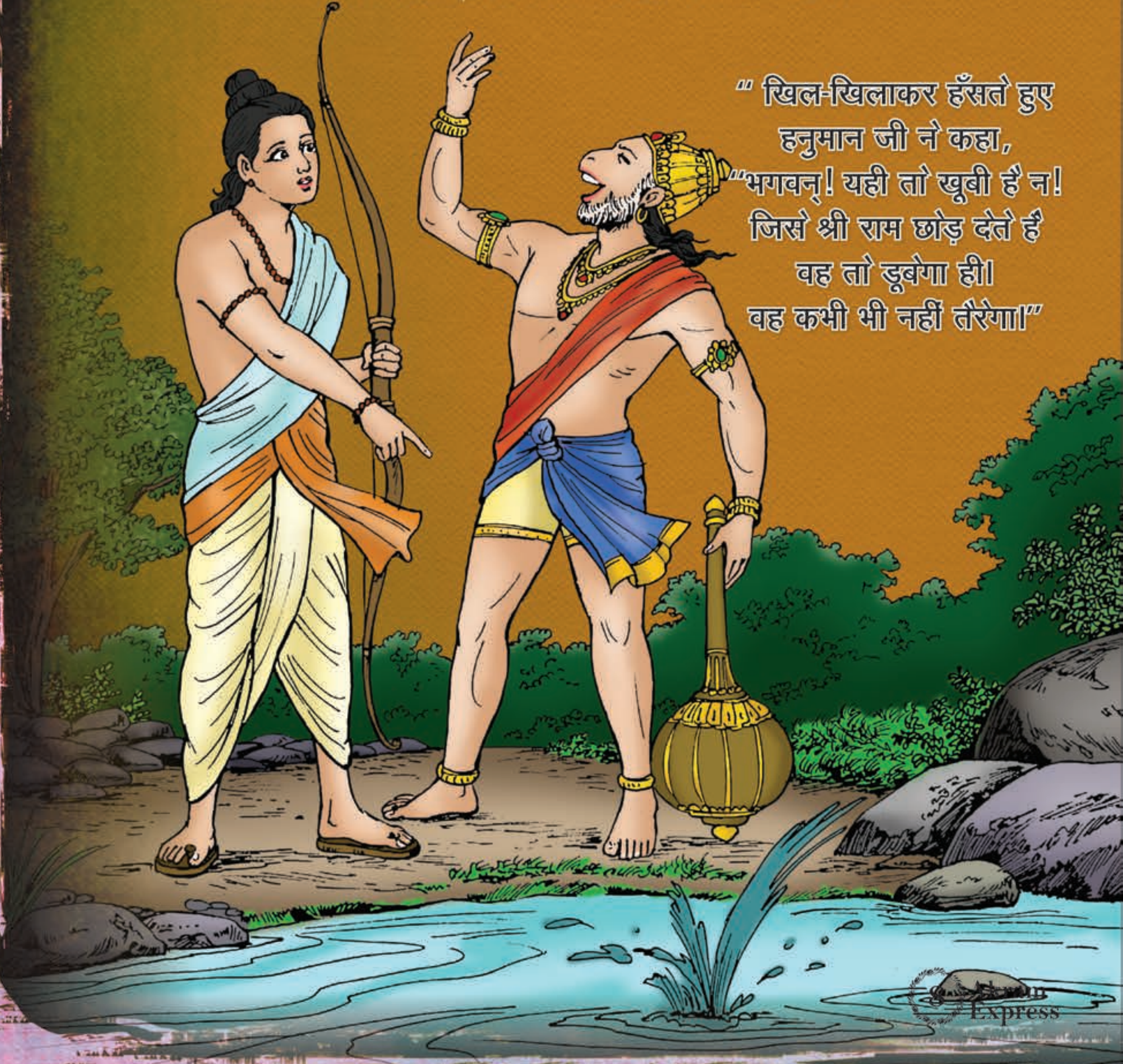

॥ श्री राम का लघुत्तम भाव ॥

जब रावण का वध हुआ तब रावण की सेना में हाहाकार मच गया और छावनी में शोक व्याप्त हो गया। यह समाचार सुनकर रावण के छोटे भाई विभिषण दौड़कर आए। रावण का मृत शरीर देखकर उनका शोक पराकाष्ठा पर पहुँच गया।

"मुझे मार दीजिए। मुझे भी नहीं जीना है।" ऐसा कहकर उन्होंने कमर में से कटार खींची।

उसी समय श्री राम वहाँ आ गए और विभिषण के हाथ से कटार खींच ली। विभिषण रोते-रोते माथे पर हाथ रखकर नीचे बैठ गए।

(क्रेरी) इतने में तो वहाँ रावण का पुत्र इन्द्रजीत, छोटा भाई कुंभकर्ण और पटरानी मंदोदरी भी वहाँ आ गए। श्री राम सभी के बीच में बैठकर बुजुर्ग की तरह सभी को आश्वासन देने लगे। (जैन रामायण के अनुसार)

थोड़ी देर बाद रावण के अग्नि संस्कार की क्रिया शुरू हुई। चिता देखकर सभी की आँख में से आँसू बह रहे हैं मंदोदरी, विभिषण, कुंभकर्ण, इन्द्रजीत और सभी।

श्री राम की आँखें भी भीग गई। उन्हें विचार आया, "कितने उत्तम महात्मा... परमात्मा के परम भक्त लेकिन कर्म बंधन में फँसे हुए... फिर कभी ऐसा पराक्रमी पुरुष दोबारा अवतरित होने में पता नहीं कितना समय चला जाएगा?"

श्री राम का लघुत्तम भाव इतना उत्कृष्ठ था। दुश्मन के प्रति भी कैसी दृष्टि।

अग्नि संस्कार पूर्ण होने के बाद श्री राम ने विभिषण का लंकापति के रूप में राज्याभिषेक किया और फिर सीता जी से मिलने गए।

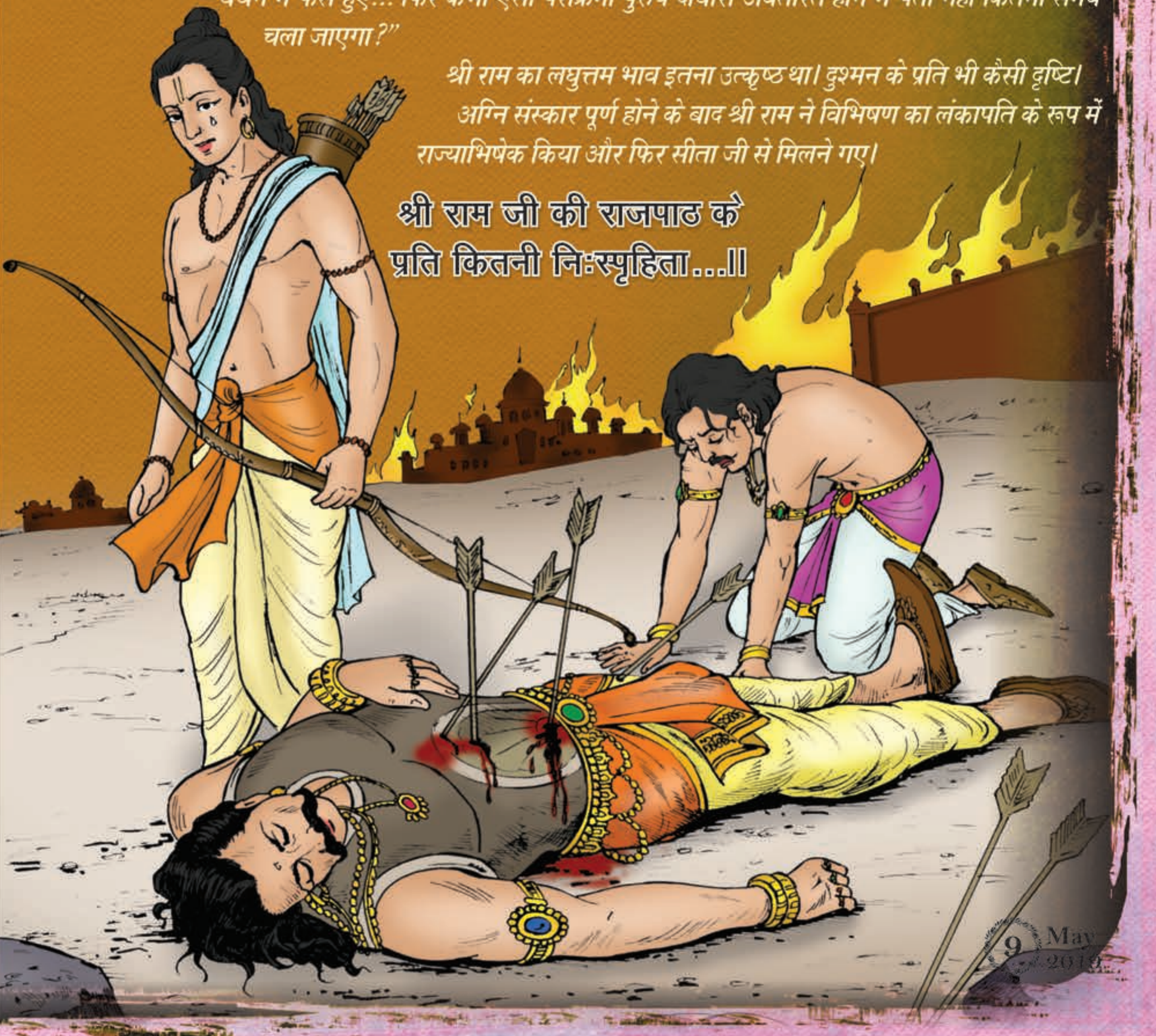

॥ श्री राम की दृष्टि ॥

श्री राम जब चौदह साल का वनवास पूर्ण करके अयोध्या वापस लौटे तब सब से पहले वे माताओं से मिलने गए।
जब वे माता कैकेई के पास गए तब कैकई ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं।
बेटा राम मुझे माफ कर देना। मैंने तुम्हें बहुत बड़ा दंड़ दे दिया।
नहीं, माँ।
तुम्हारे वनवास का कारण मैं हूँ। इसका मुझे बहुत पछतावा है।
माँ! रोओ मत। "आपने तो मेरे ऊपर असीम उपकार किया है।"
माँ मेरे ऊपर पिताजी का कितना अपार स्नेह है? इसका मुझे कब पता चला? जब वनवास निमित्त बना तब!

भरत कितना महात्मा है कितना अनासक्त है इसकी जानकारी में भी वनवास ही कारणभूत बना न?
हनुमान की विशुद्ध भक्ति, सुग्रीव की हार्दिक मैत्री, लक्ष्मण का अनुपम भ्रातृत्व, सीता का महासतीत्व भी तो वनवास के निमित्त से ही बाहर आया है।
और रावण के साथ युद्ध से ही मेरी शक्ति का प्रमाण भी वनवास के कारण ही मिला है।
और सब से बड़ा... इतनी छोटी उम्र में साधु, संतों और गुरुजनों की सेवा का अमूल्य अवसर जो मुझे प्राप्त हुआ वह भी वनवास के निमित्त से ही और यह वनवास आपकी भक्ति के ही प्रसाद में मुझे प्राप्त हुआ है।
माँ! अब आपको शोक करने का कोई भी कारण है?
ऐसे थे भगवान श्री राम... वे पूरी ज़िंदगी में कभी ऐसा नहीं बोले कि माता कैकई की वजह से मुझे जीवन में इतने दुःख भोगने पड़े। उल्टा उनका उपकार ही माना है।

॥ चलो खेलें... ॥

१. मुझे पहचानिए।

१) जिन्होंने शिवबाण उठाया। ____________

२) जो लंका की अशोकवाटिका में रहते थे। ____________

३) जिनके हृदय में राम भगवान और सीता माता बसे हुए थे। ____________

४) जिनके लिए श्री हनुमान जड़ीबुट्टी लेने गए थे। ____________

५) जिन्होंने साधु का वेश लेकर सीता माता का अपहरण किया। ____________

६) रावण के छोटे भाई जो हमेशा राम भगवान का पॉज़िटिव ही देखते थे। ____________

७) जो छः महीने खाने खाते थे और छः महीने सोते रहते थे। ____________

८) जो अयोध्या के राजा थे और जिन्होंने अपने दो पुत्रों को वनवास भेजा था। ____________

९) मिथिला के राजा और सीता माता के पिताजी। ____________

१०) राजा दशरथ की पहली पत्नी और राम भगवान के माताश्री। ____________

२. नीचे दिए हुए शब्दों को कोष्टक में से ढूँढिए।

N	B	H	Y	I	E	L	T	T	A	B	M
A	A	I	D	C	W	N	S	A	O	P	B
Y	M	N	O	O	T	L	P	I	U	T	X
A	D	R	A	M	U	E	R	J	T	Q	V
M	O	D	Y	N	T	D	R	K	L	A	I
A	A	C	O	U	R	A	G	E	N	R	C
R	D	V	D	G	L	O	K	N	A	B	T
N	Y	R	H	N	A	H	Y	E	M	X	O
D	C	C	Y	A	A	R	J	L	U	P	R
O	P	U	A	Z	E	V	D	S	N	D	Y
K	N	Q	R	C	T	S	A	Q	A	G	Y
A	K	N	A	L	V	S	A	R	H	M	B

AYODHYA

RAMAYAN

VICTORY

RAM

SITA

RAVAN

HANUMAN

COURAGE

LANKA

BATTLE

॥ श्री हनुमान जी की स्वामी भक्ति ॥

लंकापति रावण के साथ युद्ध में हनुमान जी का बहुत बड़ा योगदान था। समग्र अयोध्या नगरी विजय के आनंद में झूम रही थी।

श्री रामचंद्र जी दरबार में उपस्थित थे और वे आज युद्ध में उत्तम योगदान देने वाले को सम्मानित करने वाले थे। एक के बाद एक सभी को इनाम दिया गया। लेकिन पता नहीं क्यों? हनुमान जी को ही भुला दिया!

यह बात माता सीता से छुपी नहीं रही। दरबार का विसर्जन होने के बाद उन्होंने हनुमान जी को बुलाकर कहा, "आर्यपुत्र आपको ही भूल गए इसका मुझे बहुत आश्चर्य हुआ है और दुःख भी हुआ है। फिर भी आप बुरा मत लगाना। मैं और आर्यपुत्र, हम एक ही हैं। मैं दूँ या वे दें, बात तो एक ही है। लीजिए, इनाम में यह नौं लखा हार..."

कुछ भी बोले बिना हनुमान जी ने वह हार ले लिया। हार का एक-एक मोती बेर जितना बड़ा था। कुछ ही क्षणों बाद बोले हनुमान जी ने ज़ोर लगाकर वह हार तोड़ दिया। यह देखकर सीता जी स्तब्ध रह गई। अब हनुमान जी क्या करेंगे? इसे जानने की आतुरता में वे मौन रहीं।

हनुमान जी ने एक मोती हाथ में लिया। उन्होंने एक ही चोट में उसके दो टुकड़े कर दिए। दोनों टुकडों में वे कुछ ढूँढ रहे हों ऐसे देखा। फिर दोनों टुकड़े एक तरफ रख दिए।

फिर दूसरा मोती लिया। उसका भी यही किया।

तीसरा मोती लिया। उसकी भी यही दशा।

सभी मोतियों की वही स्थिति हो गई।

अब सीता जी से रहा नहीं गया। उन्होंने हनुमान जी से पूछा, अरे हनुमान! यह क्या खेल कर रहे हो? इतने मूल्यवान हार की यह दशा? यह क्या पागलपन है?

हनुमान जी बोले, "माताजी! शांत हो जाइए। पहले मेरी बात सुन लीजिए।"

"मैं तो हर एक मोती के टुकड़े में "राम" ढूँढ रहा था। लेकिन इनमें कहीं भी मुझे राम के दर्शन नहीं हुए। माताजी! जहाँ श्री राम नहीं, वहाँ मुझे काम नहीं। यह ले लीजिए वापस आपका नौं लखा हार।"

हनुमान जी की ऐसी राम भक्ति देखकर सीता जी क्षणभर के लिए दंग रह गई और साथ ही साथ प्रसन्न भी हुई।

॥ सिंदूर का रहस्य ॥

एक बार हनुमान जी ने माता सीता की माँग में सिंदूर देखकर आश्चर्यपूर्वक माता सीता से पूछा "माता, यह लाल द्रव्य मस्तक पर क्यों लगाती हो?"

ब्रह्मचारी हनुमान जी की इस सीधी सादी बात से प्रसन्न होकर माता सीता ने जवाब देते हुए कहा, "पुत्र यह लगाकर मैं अपने स्वामी की दीर्घायु की कामना करती हूँ और वे मुझ पर प्रसन्न रहते हैं।"

यह सुनकर हनुमान जी बहुत प्रसन्न हुए और सोचने लगे कि यदि चुटकीभर सिंदूर लगाने से आयुष्य की वृद्धि होती है तो मैं क्यों नहीं अपने पूरे शरीर पर सिंदूर के अमरत्व की भावना करूँ?

फिर उन्होंने ऐसा ही किया। पूरे शरीर पर सिंदूर का लेप लगाया और जब वे श्री राम के पास गए तो भगवान श्री राम उन्हें देखकर हँसने लगे और प्रसन्न भी हुए। इसलिए हनुमान जी को माता सीता के वचन पर दृढ़ विश्वास हो गया।

जिस तरह से विवाहित स्त्रियाँ अपने पति की लंबी आयु के लिए माँग में सिंदूर लगाती हैं उसी तरह हनुमान जी भी अपने स्वामी भगवान श्री राम के लिए पूरे शरीर पर सिंदूर लगाते हैं।

कहा जाता है कि इसीलिए

हर शनिवार को

हनुमान जी को

सिंदूर

चढ़ाया जाता है।

॥ अनोखी सेवा ॥

एक बार सुबह श्री राम के स्नान करने के बाद, जब हनुमान जी उन्हें पीतांबर देने जा रहे थे तब सीता जी ने उन्हें रोकते हुए कहा, "पीतांबर मुझे दे दो। यह सेवा तो मेरी है।"

किसी अन्य सेवा के समय लक्ष्मण जी ने उन्हें यह कहकर रोक दिया कि "यह सेवा मेरी है।"

हनुमान जी ने सीता माता से विनयपूर्वक पूछा, "माताजी, आप मुझसे नाराज़ हो गए हो? मुझे सेवा क्यों नहीं करने दी?

सीता जी ने कहा, "पुत्र, कल सभी सेवाओं का बँटवारा हो गया है। तुम्हारे लिए कोई सेवा बाकी नहीं रही है।"

हनुमान जी ने कहा, "एक सेवा बाकी है माँ, जब प्रभु को जम्हाई आएगी तो चुटकी बजाने की सेवा मैं करूँगा।"

सीता जी ने कहा, "ठीक है, तुम चुटकी बजाना।"

इस तरह सारा दिन हनुमान जी श्री राम के साथ ही साथ रहने लगे। रात हुई। रात को भी हनुमान जी श्री राम प्रभु के पास से नहीं हटे तो सीता जी ने कहा, "पुत्र, अब तुम जाओ।"

हनुमान जी ने कहा, माताजी, मेरी सेवा तो चौबीस घंटों की है। प्रभु को जम्हाई आएगी तब चुटकी कौन बजाएगा?

सीता जी ने श्री राम से कहा, "अपने सेवक को कहा कि वह बाहर जाए।"

श्री राम ने हँसते-हँसते जवाब दिया, "मैं हनुमान जी से कुछ नहीं कह सकता। हनुमान जी ने मुझे ऋणी बना दिया है। यदि मैं उनके एक-एक उपकार के बदले अपना एक-एक प्राण दे दूँ तो भी उनका ऋण पूरा नहीं होगा।

श्री राम ने ऐसा कहा फिर भी सीता जी ने हनुमान जी को बाहर जाने के लिए कहा।

हनुमान जी बाहर आए और सोचने लगे कि मुझे एक सेवा मिली थी वह भी माता जी ने ले ली। उन्हें दुःख हुआ कि मुझे कोई सेवा नहीं देते।

अंत में हनुमान जी को एक यूक्ति सूझी और उन्होंने निश्चय किया कि कल सुबह दर्शन होने तक मैं चुटकी बजाता रहूँगा। यदि अंदर प्रभु को जम्हाई आएगी तो मेरी सेवा हो जाएगी।

राजमहल की छत पर चुटकी बजाते-बजाते, राम नाम का कीर्तन करते हुए हनुमान जी नाचने लगे।

यह देखकर श्री राम को विचार आया, अपनी सेवा पूरी करने के लिए हनुमान जी चुटकी बजा रहे हैं। मेरा हनुमान पूरी रात जागे और मैं सो जाऊँ यह योग्य नहीं है।

उन्होंने तय किया कि हनुमान जब तक चुटकी बजाएँगे तब तक मैं भी जम्हाई लूँगा। मैं भी हनुमान की तरह पूरी रात जागरण करूँगा।

भगवान को हमेशा भक्त की चिंता होती है।

श्री राम जम्हाई पर जम्हाई लेने लगे। यह देखकर सीता जी को घबराहट हो गई कि उनका श्वास उखड़ गया है क्या? रघुनंदन क्यों कुछ बोल नहीं रहे।

सीता जी ने माता कौशल्या को यह बताया। कौशल्या माता ने वसिष्ठ मुनि को बुलवाया और श्री राम की दशा का वर्णन किया। वसिष्ठ जी समझ गए कि कोई भक्त दुःखी हो तो भगवान को नींद नहीं आती।

उन्होंने पूछा, "आज कुछ गड़बड़ तो नहीं हुई न?"

सीता जी ने याद करके कहा, "आज हमने पुत्र हनुमान के लिए कोई सेवा नहीं रखी थी इसलिए वह दुःखी था।"

ऐसा कहकर सीता जी ने चुटकी बजाने की सेवा की बात वसिष्ठ मुनि को बता दी।

यह सुनकर वसिष्ठ मुनि सभी को लेकर हनुमान जी के पास गए। हनुमान जी राजमहल की छत पर चुटकी बजाते बजाते हुए राम नाम का जाप करते हुए नाच रहे थे।

वसिष्ठ मुनि जी ने हनुमान जी को विनती करते हुए कहा, "महाराज, चुटकी मत बजाइए। चुटकी बजाओगे तो श्री राम को जम्हाई आएगी और उन्हें नींद नहीं आएगी।"

हनुमान जी ने चुटकी बंद कर दी और श्री राम को जम्हाई आनी बंद हो गयी।

पूरा जगत् भगवान के अधीन होता है जबकि भगवान भक्त के अधीन होते हैं।

जर्मनी में – पूज्यश्री द्वारा जर्मन भाषा में भगवान कहाँ रहते हैं बुक ओपनिग और पूज्यश्री के साथ बच्चे।

Summer Camp 2019

૪ से ૭ वर्ष के बच्चों के लिए आयोजित समर कैम्प की झलक...

पज़ल के जवाब :

१)

૧) राम ૨) सीता ૩) श्री हनुमान ૪) लक्ष्मण जी ૫) रावण ૬) विभिषण ૭) कुंभकर्ण ૮) राजा दशरथ ૯) राजा जनक ૧૦) रानी कोशल्या

२)

N	B	H	Y	I	E	L	T	T	A	B	M	
A	A	I	D	C	W	N	S	A	O	P	B	
Y	M	N	O	O	T	L	P	I	U	T	X	
A	D	R	A	M	U	E	R	J	T	Q	V	
M	O	D	Y	N	T	D	R	K	L	A	I	
A	A	C	O	U	R	A	G	E	N	R	C	
R	D	V	D	G	L	O	K	N	A	B	T	
N	Y	R	H	N	A	H	Y	E	M	X	O	
D	C	C	Y	A	A	R	J	L	U	P	R	
O	P	U	A	Z	E	V	D	S	N	D	Y	
K	N	Q	R	C	T	S	A	Q	A	G	Y	
A	K	N	A	L	V	S	A	R	H	M	B	

Akram Express
May 2019
Year : 7, Issue : 2
Conti. Issue No.: 74

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

॥ और अंत में... ॥

श्री राम भगवान क्यों कहलाते हैं?

क्या श्री राम ने राजगद्दी का त्याग किया था इसलिए?
क्या श्री राम ने पिता की आज्ञा का पालन किया और वन में गए इसलिए?
क्या श्री राम ने कैकई का दोषित नहीं देखा इसलिए?
क्या इन सभी की वजह से श्री राम भगवान कहलाए?

नहीं।

राजगद्दी का त्याग कई राजाओं ने किया है।
माता-पिता के विनय में भी बहुत राजा थे।

तो?

श्री राम को उनके गुरु वसिष्ठ से आत्मा का ज्ञान प्राप्त हुआ था। आत्मज्ञान से ही भगवान पद प्राप्त होता है। श्री राम पूर्ण पुरुषोत्तम कहलाए।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए खास जानकारी कि अगले महीने से कुछ कारणों से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस पब्लिश करना बंद कर रहे हैं। अब से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस **Akonnect app** या **Kids Website** की नीचे दी गई लींक से डाउनलोड करके पढ़ सकेंगे।
https://kids.dadabhagwan.org/knowledgehouse/magazines/Hindi/All+Years/All+Months/

अभी जो हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस के ऐक्टिव मेम्बर हैं, उन्होंने मेम्बरशिप रजिस्टर करने के दौरान जो रकम दी थी, वह पूरी रकम उनको मनी ऑर्डर द्वारा वापस भेज दी जाएगी।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025